

■ शीर्षक पृष्ठ



Ministry of Education
Government of India



वर्तमान परिप्रेक्ष में सर्वतोमुखी समाधांबके संदर्भ में योग दर्शन और मध्यस्थ दर्शन का तुलनात्मक अध्ययन।

प्रशिक्षु: जिनल गेवरिया ।

(आत्मीय यूनिवर्सिटी, राजकोट)

प्ररामार्शदाता : विशाल छाया जी ।

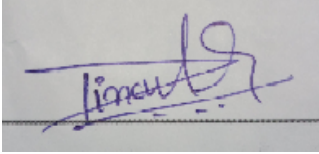
(डिप्लोमा मैकेनिकल डिपार्टमेंट एवम यूनिवर्सल ह्यूमन वैल्यु, आत्मीय युनिवर्सिटी, राजकोट)

प्रकाशन विधि: 15 सटेंबर 2022

यह कार्य IKS इंटनशिप कार्यक्रम के तहत से किया गया

इंटरनद्वारा मौलिकता प्रमाणपत्र

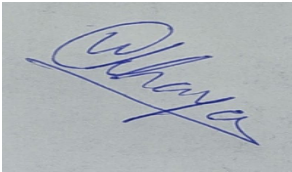
मैं घोषणा करती हूँ कि यह रिपोर्ट मेरे अपने शब्दों में मेरे विचारों को प्रस्तुत करती है और जहां दूसरों के विचारों या शब्दों को शामिल किया गया है, वहां मैंने मूल स्रोतों को पर्याप्त रूप से दर्शाया है और उनका संदर्भ दिया है। मैं घोषणा करती हूँ कि मैंने इस रिपोर्ट को प्रस्तुत करने में उपयोग किए गए सभी स्रोतों को ठीक से और सटीक रूप से स्वीकार किया है। मैं यह भी घोषणा करती हूँ कि मैंने अकादमिक ईमानदारी और सत्यनिष्ठा के सभी सिद्धांतों का पालन किया है और मेरे प्रस्तुतीकरण में किसी भी विचार / डेटा / तथ्य / स्रोत को गलत तरीके से प्रस्तुत नहीं किया गया है अथवा गढ़ा या मिथ्या रूप में नहीं दिया गया है। मैं समझती हूँ कि उपरोक्त का कोई भी उल्लंघन पाए जाने पर आईकेएस प्रभाग द्वारा अनुशासनात्मक कार्रवाई की जा सकती है और उन स्रोतों द्वारा दंडात्मक कार्रवाई भी हो सकती है जिनका इस प्रकार उचित रूप से उल्लेख नहीं किया गया है या जिनसे आवश्यकता होने पर उचित अनुमति नहीं ली गई है।



इंटरन के हस्ताक्षर

मेंटरद्वारा मौलिकता प्रमाणपत्र

मैं एतद्वारा प्रमाणित करता/करती हूँ कि उपरोक्त रिपोर्ट सत्य है और यह कार्य मेरे मार्गदर्शन में किया गया था



मेंटर के हस्ताक्षर

■ विषय -सूची (यदि उपयुक्त हो)

Sr no.	Table of Content	Page no.
1.	सार (एब्स्ट्रेक्ट)	01
2.	कार्यकारी सारांश	04
3.	परिचय	06
4.	पृष्ठभूमि एवं \या प्रामाणिकता	07
5.	परियोजना का विवरण	07
6.	विधियाँ एवं \या प्रक्रियाए	18
8.	पारीनाम	20
9.	चर्चा	21

10.	निष्कर्ष और / सिफारिशे	22
11.	स्वीकृतियां	22
12.	संदर्भ	23
13.	परिशिष्ट	23

■ सार (एब्स्ट्रेक्ट)

भारतीय ज्ञान परंपरा के द्वारा दिए गए विषयों में से हमने दर्शन शास्त्रों और दर्शन शास्त्रों के भागरूप दो अन्य दर्शन योग दर्शन और मध्यस्थ दर्शन का अध्ययन करने का नक्की किया। सबसे पहले हमने दर्शन के बारे में अध्ययन किया। फिर उनके भागरूप योग दर्शन के बारे में अध्ययन किया जैसे की उसके मुख्य बिंदु क्या है? उनकी परीभाषा क्या है? उनका भावार्थ क्या है? उनके रचयाता कौन है? ये सब आपको इस रिपोर्ट दिखया गया है। फिर हमने मध्यस्थ दर्शन क्या है ये अध्ययन किया। और उसमें मुख्य बिंदु कौन कौन से है? और उसका मुख्य उद्देश क्या है? उसका भावार्थ क्या है? ये सब के बारे में अभ्यास किया। फिर अंत में दोनों नो दर्शन की तुलना की उससे हमें पता चला की योग दर्शन प्रायोगिक अनुभव है और मध्यस्थ दर्शन वर्तमान समय की सहस्तित्व को दर्शाता है।

■ Abstract

Out of the subjects given by the Indian knowledge systems, we set out to study the philosophy of philosophy and the two other darshans that form part of the philosophy of philosophy, yoga philosophy and madhyasth philosophy. First we studied about philosophy. Then studied about Yoga philosophy such as what is its main point? What is their language? What is their meaning? Who is their creator? All this has been shown to you in this report. Then we studied what is madhyasth philosophy and what are the main points in it? And what is its main purpose? What is its meaning? It's all about practice. Then in the end by comparing both the no philosophies, we came to know that yoga philosoph is experimental experience and mdhyasth philosophy shows the coexistence of the present time.

कार्यकारी सारांश

भारतीय ज्ञान परंपरा के द्वारा दिए गए 18 विषयों में से मैंने दर्शन शास्त्र को पसंद किया और सबसे पहले मैंने दर्शन शास्त्र के बारे में बताया है। दर्शन शास्त्र क्या है? उनके कितने भाग हैं? उनकी रचना का मुख्य उद्देश्य क्या है? वो भी बताया गया है। ऐ सब के बारे में दर्शाया गया है। फिर मैंने दर्शन शास्त्र के भाग रूप दो अन्य दर्शन, योग दर्शन और मध्यस्थ दर्शन का अध्ययन किया। सबसे पहले हमने इस प्रोजेक्ट में दोनों दर्शन का परिचय दिया है। उसमें मैंने योग दर्शन और मध्यस्थ दर्शन क्या है? उनके रचना कब हुई है?, दर्शनों की रचना कैसे हुई?, और दर्शनों के राचाना किसने की थी ऐ भी दर्शाया गया है। और उनके मुख्य बिंदु का अध्यायन किया जैसे की, योग दर्शन के मुख्य बिंदु, समाधि, साधना, धारण, यम, नियम, आत्मा, मोक्ष, सत्य, सुख, दुःख, अपरिग्रह, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, आदि जैसे मुख्य बिंदु ही हैं। जिसका हमने अध्ययन किया उनकी परिभाषा जानी और समझी ऐ क्या बताना चाहते हैं। वैसे ही मध्यस्थ दर्शन के मुख्य बिंदु सहअस्तित्व, मोक्ष, सत्य, परिवार, संबंध, सामाजिक शोषण, समाज और समाज में अपने रिश्ते, प्रकृति आदि मुख्य बिंदु को जाना उसकी परिभाषा क्या है वो समझा।

योग दर्शन और मध्यस्थ दर्शन ऐ दोनों का तुलनात्मक अध्ययन किया। वो भी आपको इस रिपोर्ट में आगे देखने को मिलेंगे। मानव जीवन में और प्रकृति में आज के समय में जो समस्या है। वो कैसे उत्पन्न हुए, वो समस्या का मानव कैसे जिमेदार ही ऐ भी बताया गया है। और ऐ समस्याओं से मानव और प्रकृति को कैसे बाहर निकले वो समाधान भी बताया गया है। दर्शन में हमें क्या सिखने को मिला ऐ भी बताया गया है। योग दर्शन है वो प्रायोगिक अनुभव है और मध्यस्थ दर्शन है वो वर्तमान समय का सह अस्तित्व तो बताता है। और उसमें वर्तमान समय की समस्या भी बताई गई है और उषा समाधान भी बताया गया है।

| Abstract

Out of the 18 subjects given by the Indian knowledge tradition, I liked philosophy and first of all I have told about philosophy. What is philosophy? How many parts do they have? What is the main purpose of his creation? That too has been told. Ai is shown about all. Then I studied two other philosophies, yoga philosophy and mediator philosophy, as part of philosophy. Firstly we have introduced both the philosophies in this project. What is my yoga philosophy and mediator philosophy? When were their creations?, How were the philosophies created? And who did the creation of philosophies is also shown and studied their main points such as, the main points of yoga philosophy, Samadhi, Sadhana, Dharana, Yama, Niyama, Soul, Moksha, Truth, Happiness, Sadness, Aparigraha, Asteya, Brahmacharya, etc. are the main points. Know the definition of what we studied and understood what we want to tell. In the same way, the main points of mediation philosophy are coexistence, salvation, truth, family, relationship, social exploitation, knowing the main point of one's relationship in society and society, nature, etc.

Comparative study of both yoga philosophy and mediator philosophy. You will also get to see them later in this report. In today's time in human life and in nature, how did they arise, how humans are responsible for that problem and how the human and nature got out of these problems, the solution has also been told. What we got to learn in philosophy has also been told. Yoga is philosophy, it is experimental experience and mediation is philosophy, it tells the co-existence of present time and in it the problem of present time has also been told and Usha solution has also been given.

■ परिचय

दर्शन शब्द संस्कृत की 'दृश' धातु से बना है जिसका अर्थ 'द्रष्टि' ऐसा होता है। दर्शन यथार्थ की परख के लिए एकद्रष्टिकोण। दर्शन शास्त्र वह ज्ञान है जो परम सत्य और सिद्धांतों, और उनके कारणों की विवेचना करता है। भारत में दर्शन उस विद्या को कहा गया है जिसके द्वारा तत्व का ज्ञान हो सके। 'तत्व दर्शन' या 'दर्शन' का अर्थ है तत्व का ज्ञान। मानव के दुखों की निवृत्ति के लिए और तत्व ज्ञान करने के लिए ही भारत में दर्शन का जन्म हुआ है। हृदय की गाठ तभी खुलती है और शोक तथा संशय तभी दूर होते हैं जब एक सत्य का दर्शन होता है। दर्शन का मुख्य उद्देश मानव जीवन की समस्याओं और दुखों को समाधान करना। और उन्हें मुक्ति दिलाकर मोक्ष प्राप्ति करवाना है।

दर्शन शास्त्र में एक दर्शन है योग दर्शन। योग दर्शन वो दर्शन शास्त्र का ही एक भाग है। ऐसा माना जाता है योग की परंपरा अति प्राचीन है और इसकी उत्पत्ति हजारों वर्ष पहले हुई थी। और ये भी माना जाता है योग विद्या में योग के 'आदिगुरु' या योग के 'जनेता' आदियोगी भगवान 'शिव' को माना जाता है। भगवान शिव के बाद कई सारे वैदिक ऋषिमुनि आए और उन सब ने योग और तप करके योग का प्रारंभ किया। फिर महर्षि पतंजलि आए और उसने योग को सुव्यवस्थित रूप दिया इसी लिए उसे योग शास्त्र के प्रणेता माना जाता है। योग दर्शन का उल्लेख वेदों में भी किया गया है। ऐ सब तो योग की उत्पत्ति की बात है योगशास्त्र का अंश उद्देश्य मनुष्यों को वह मार्ग दिखाना है जिस पर चलकर वह जीवन समस्या का समाधान करवाना और परम लक्ष्य यानि की मोक्ष की प्राप्ति करवाना है।

इसी प्रकार मध्यस्थ दर्शन भी दर्शन शास्त्र का एक भाग है। मध्यस्थ दर्शन (सहअस्तित्ववाद) भारत वर्ष में निर्गमित एक नया दर्शन है जो श्री उग्रहार नागराज (१९२०-२०१६) द्वारा प्रतिपादित एवं लिखित है। यह "अस्तित्व मुलक मानव केन्द्रित चिंतन" है। दर्शन का तात्पर्य वास्तविकता को जैसे है वैसे ही संजने तथा प्रकट करने से है। मध्यस्थ दर्शन अस्तित्व में अनुभव की ही अभिव्यक्ति संप्रेषणा प्रकाशन है। इस दर्शन में यथार्थता, वास्तविकता, सत्यता का प्रतिपादन है। मानव जीवन की वास्तविकता इसके बारे में लिखा है।

इन दोनों दर्शनों के बारे में अध्ययन करने के बाद ऐ समझ आता है की ये दोनों दर्शनों मानव जीवन के अस्तित्व के बारे में दिखाया गया है।

■ पृष्ठभूमि एवं \या प्रामाणिकता

भारतीय ज्ञान परंपरा (IKS) के द्वारा दिए गए १८ विषयों में से दर्शन और उसके दर्शनशास्त्र के भागरूप में योग दर्शन और मध्यस्थ दर्शन को इस प्रोजेक्ट में दर्शाया गया है।

में इस प्रोजेक्ट को इस वजह से चुना है क्योंकि इसमें योग दर्शन और मध्यस्थ दर्शन में मानव जीवन और प्रकृति समस्याका का सर्वोत्तमोखिसमाधान का कार्य व्यवहारिक स्वरूप को दिखाया गया है।

योग दर्शन के साथ मध्यस्थ दर्शन के तुलनात्मक अध्ययन पूर्वक अस्तित्व में व्यवस्था का स्वरूप और मानव में व्यवस्था का स्वरूप स्पष्ट होता है, व्यवस्था के आधार पर मानव से सम्बन्धित जितनी भी समस्या है उनके उत्तर मध्यस्थ दर्शन में प्रस्तुत है, प्रमाणित है इसे निरीक्षण, परीक्षण, सर्वेक्षण पूर्वक शोध पूर्वक जांचा जा सकता है और मानव की सभी आयामों और परिस्थितियों में यह उत्तर की प्रासंगिकता को पहचाना जा सकता है।

पतंजलि मुनि के रचित योग दर्शन और श्री नागराज द्वारा लिखित मध्यस्थ दर्शन में जो उन्होंने मानव मूल्य और महत्व के बारे में दिखाया गया है। वो में भारतीय ज्ञान परंपरा के द्वारा भारतीय शिक्षा में लाना चाहती हु। उसके द्वारा में सबको अपने आप से पहचान करवाना चाहती हूं। जैसे की में कौन हूं?, संसार क्या है?, मेरा लक्ष्य क्या है? आदि।

योग दर्शन एवं मध्यस्थ दर्शन में समाये गए मुख्य बिन्दुओं जैसे की योग दर्शन में वैराग्य-त्याग, आत्मा-त्याग, संन्यास विवेक - गुण - दोष का अंतर (ज्ञान योग), यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, और समाधि (राजयोग), दुख, सुख, मोक्ष (कर्मयोग) पुजा, भक्ति, जप या कीर्तन, नृत्य, प्रशाद सेवन आदि (भक्तियोग) समावेश है और मध्यस्थ दर्शन के अनुसार परिवार, समाज, समाज में हमारे अपने रिश्ते, प्रकृति आदि बिन्दुओं का महत्व और मूल्य का में सबको दिखाना और समजाना चाहती हु। इसीलिए में भारतीय ज्ञान परंपरा के मध्यम से सम्पूर्ण भारत में भारत की शिक्षा में सामील करना चाहती त हूं।

इसी प्रकार योग दर्शन और मध्यस्थ दर्शन के तुलनात्मक अध्ययन पूर्वक अस्तित्व में व्यवस्था का स्वरूप और मानव में व्यवस्था का स्वरूप स्पष्ट होता है। एक्स

■ परियोजना का विवरण

— दर्शन शास्त्र

भारतीय दृष्टिकोण से दर्शन का अर्थ राधाकृष्णन के अनुसार दर्शन शब्द की उत्पत्ति 'द्रूश' धातु से हुई है। जिसका अर्थ 'देखना' है दर्शन का प्रमुख उद्देश मनुष्यों एवं उसकी उत्पत्ती के विभिन्न प्रश्नों के उत्तर देना है जैसे की हिंशा, अहिंशा, प्राण, आसन, ध्यान, समाधि, और सबसे महत्व पूर्ण में कौन हु? 'संसार क्या है? इन सब के बारे में दिखाना और ज्ञान की पिपासा को तृप्त करना, सत्य की खोज करना तथा मानव- जीवन, ईश्वर तथा द्रासी जगत तत्वों की जानकारी प्रगट करना है।

भारतीय दर्शन शास्त्र के दो प्रकार हैं।

- आस्तिक दर्शन - वेद को प्रामाणिक मानने वाले दर्शन को दर्शन के रूप में जाना जाता है।

- नास्तिक दर्शन - वेद को अप्रामाणिक मानने वाले दर्शन को नास्तिक दर्शन के रूप में जाना जाता है।

- आस्तिक दर्शन ६ हैं।

जैसे की न्याय, वैशेषिक, सांख्य, योग, मीमांशा, और वेदात है।

- नास्तिक दर्शन ३ हैं।

जैसे की, चार्वाक, जैन, बौद्ध को इस वर्ग में रखा गया है।

दर्शन शस्त्र वह ज्ञान है जो फार्म सती और सिद्धांतों और उनके करणों की विवाचना करता है। दर्शन यथार्थ की परख के लिए एक दृष्टिकोण है। दर्शनीक चिंतन मूलतः जीवन की अर्थवाता की खोज का पर्याय है। वस्तुतः दरसह-शास्त्र स्वत्य, तथा समाज और मानव चिंतन तथा सज्ञान की प्रक्रिया के समान्य नियमों का विज्ञान है। दर्शन शास्त्र सामाजिक चेतना के रूपों में से एक है।

II योग दर्शन

ऐस माना जाता है की योग दर्शन की परंपरा अति प्राचीन है जैसे की हमने देखा योग के जनेता महान आदि योगी शिव को माना जाता है। फिर उसके बाद अनेक वैदिक ऋषि मुनि आए फिर उसने योग और तप करके योग का प्रारम्भ किया। फिर महर्षि पतंजलि मुनि आए और उसने योग को सुव्यवधित रूप दिया। इसलिए उसे योग के प्रणेता माना जाता है।

योग दर्शन की परंपरा अति प्राचीन है। योग का उल्लेख वेद में भी किया गया है। इसका मतलब योग अति प्राचीन है। दर्शनशास्त्रों में योगदर्शन छः आस्तिक दर्शनों (षड्दर्शन) में से एक है। इसके प्रणेता पतञ्जलि मुनि हैं। यह दर्शन सांख्य दर्शन के 'पूरक दर्शन' के नाम से प्रसिद्ध है। इस दर्शन का प्रमुख लक्ष्य मनुष्य को वह मार्ग दिखाना है जिस पर चलकर वह जीवन के परम लक्ष्य (मोक्ष) की प्राप्ति कर सके।

अन्य दर्शनों की भांति योगदर्शन तत्त्वमीमांसा के प्रश्नों (जगत क्या है, जीव क्या है?, आदि) में न उलझकर मुख्यतः मोक्षप्राप्ति के उपाय बताने वाले दर्शन की प्रस्तुति करता है। किन्तु मोक्ष पर चर्चा करने वाले प्रत्येक दर्शन की कोई न कोई तात्विक पृष्ठभूमि होनी आवश्यक है। अतः इस हेतु योगदर्शन, सांख्यदर्शन का सहारा लेता है और उसके द्वारा प्रतिपादित तत्त्वमीमांसा को स्वीकार कर लेता है। इसलिये प्रारम्भ से ही योगदर्शन, सांख्यदर्शन से जुड़ा हुआ है।

प्रकृती पुरुष के स्वरूप के साथ ईश्वर के अस्तित्व को मिलाकर मनुष्य जीवन की आध्यात्मिक, मानसीक और शारीरिक उन्नति के लिये दर्शन का एक बड़ा व्यावहारिक और मनोवैज्ञानिक रूप योगदर्शन में प्रस्तुत किया गया है। इसका प्रारम्भ पतञ्जलि मुनि के योगसूत्रों से होता है।

योगसूत्रों की सर्वोत्तम व्याख्या व्यास मुनि द्वारा लिखित व्यासभाष्य में प्राप्त होती है। इसमें बताया गया है कि किस प्रकार मनुष्य अपने मन (चित) की वृत्तियों पर नियन्त्रण रखकर जीवन में सफल हो सकता है और अपने अन्तिम लक्ष्य निर्वाण को प्राप्त कर सकता है। योगदर्शन, सांख्य की तरह द्वैतवादी है। योग दर्शन पूर्ण रूप से सांख्य के तत्त्वमीमांसा को स्वीकार करता है। और उसके साथ ईश्वर को जोड़ देता है। इसलिए योग दर्शन को से 'सेश्वर सांख्य' (सांख्य ईश्वर) कहा जाता है। और सांख्य को 'निरीश्वर सांख्य' कहा जाता है।

अब बात करे तो योग दर्शन के केन्द्र की, तो हमें पता चला की योग दर्शन में पुरुष तत्व को केन्द्रीय विषय में प्रस्तुत किया गया है।

यद्यपि पुरुष और प्रकृति दोनों की स्वतन्त्र सत्ता मानी गयी है परन्तु तात्त्विक रूप में पुरुष की सत्ता ही सर्वोच्च है। पुरुष को चैतन्य एवं अपरिणामी कहा गया है, किन्तु अविद्या के कारण पुरुष जड़ एवं परिणाम चित्त में स्वयं को आरोपित कर लेता है। पुरुष और चित्त के संयुक्त हो जाने पर विवेक जाता रहता है और पुरुष स्वयं को चित्त रूप में अनुभव करने लगता है। यह अज्ञान ही पुरुष के समस्त दुःखों, क्लेशों का कारण है। इस तरह से दुःख और क्लेश उत्पन्न होते हैं।

योग दर्शन का मुख्य उद्देश्य पुरुष को इस दुःख से, अज्ञान से, मुक्त कराना है। इसी तथ्य को सैद्धान्तिक रूप से योग दर्शन में

- हेय,

- हेय-हेतु,

- हान

-हानोपाय

के रूप में प्रस्तुत किया गया है। इन चार क्रमों में पुरुष दुःखों से मुक्ति पा सकता है, इसलिये योग में इसे 'चतुर्व्यूहवाद' कहा गया है

इस चतुर्व्यूह से मुक्त होना ही योग दर्शन का परम उद्देश्य है। चतुर्व्यूहवाद की विवेचना में ही योग दर्शन में पुरुष, पुरुषार्थ और पुरुषार्थशून्यता का दर्शन प्रकट होता है। पुरुष अविद्याग्रस्त होने पर संसार-चक्र में पड़ता है और पुरुषार्थशून्यता की अवस्था को प्राप्त करता है। पुरुष का परम लक्ष्य कैवल्य की प्राप्ति है।

योग दर्शन में पुरुष को आत्मा का पर्याय माना गया है। अतः आत्मा, जो कि संख्या में असंख्य है, उसकी कैवल्य प्राप्ति तभी हो सकती है जब चतुर्व्यूह का पुरुषार्थ साधन कर दुःख के त्रिविध रूपों का सामाधान कर लिया जाय।

दुःख के तीन रूप हैं -

आध्यात्मिक,

आधिभौतिक

आधिदैविक।

अब बात करे मोक्ष की, के ऐ दुखों से मुक्ति कैसे लाया जाय तो हमें पता चला की योग दर्शन में पुरुषार्थशून्यता को इन त्रितापों से ऊपर की अवस्था है। पुरुषार्थशून्यता के द्वारा हम मोक्ष की प्राप्ति कर सकते हैं।

सांख्य दर्शन को ध्यान में रखते हुए योग दर्शन के अनुसार इस जगत में असंख्य पुरुष हैं और एक प्रधान या मूल प्रकृतिपुरुष चित् है, प्रधान अचित्। पुरुष नित्य है और अपरिवर्तनशील, प्रधान भी नित्य है परन्तु परिवर्तनशील। दोनों एक दूसरे से सदा पृथक् हैं, परन्तु एक प्रकार से एक का दूसरे पर प्रभाव पड़ता है।

पुरुष के सान्निध्य से प्रकृति में परिवर्तन होने लगते हैं। वह क्षुब्ध हो उठती है। पहले उसमें महत् या बुद्धि की उत्पत्ति होती है, फिर अहंकार की, फिर मन की। अहंकार से ज्ञानेन्द्रियों और कर्मेन्द्रियों तथा पाँच तन्मात्राओं अर्थात् शब्द, स्पर्श, रूप, रस तथा गन्ध की, अन्त में इन पाँचों से आकाश, वायु, तेज, अप और क्षिति नाम के महाभूतों की। इन सबके

संयोग वियोग से इस विश्व का खेल हो रहा है। संक्षेप में, यही सृष्टि का क्रम है।

दर्शन चार विभागो मे विभाजित किया गया है।

राजयोग , कर्मयोग ,भक्तियोग ,और ज्ञानयोग।

इस मे सबसे पहले हम राजयोग के बारे मे बात करेगे,

राजयोग

ऐतिहासीक रूप मे, कर्मयोग की अंतिम अवस्था 'समाधि' को ही 'राजयोग' कहते थे। आधुनिक संदर्भ मे, हिन्दुओ के छः दर्शनों मे से एक का नाम 'राजयोग' (या केवल योग) है। महर्षि पतंजलिका योग सूत्र इसका मुख्य ग्रंथ है। १९ वी शताब्दी मे स्वामि विवाकन्द ने 'राजयोग' का आधुनिक अर्थ मे प्रयोग आरंभ किया था।

ये हैं : षट्कर्म, आसन, मुद्रा, प्रत्याहार, प्राणायाम, ध्यान और समाधि। महर्षि पतंजलि के योग को ही अष्टांग योग या राजयोग कहा जाता है। इसके आठ अंग होते हैं

योग दर्शन(राजयोग) के प्रकार के अनुक्रम यम-नियम , प्राणायाम, परत्याहार ,धारणा, ध्यान , समाधी, हैं। योग दर्शन मे योग सूत्र को पतंजलिने २०० ई.पूर्व लिखा था।इसे योग पर लिखी पहली सुव्यवस्थित लिखित कृति मानते है। इस पुस्तक मे १९५ सूत्र है जो चार अध्यायों मे विभाजित है।वर्तमान मे योग के तीन ही अंग है आसन ,प्राणायाम और ध्यान।

राजयोग के आठ अंग है प्रथम है।

यम- उसमे अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिशुद्ध का समावेश होता है।

नियम - उसमे शौच, संतोष, तप, स्वाध्याय और इश्वरप्रणीधान है।

आसन- आसन का मतलब है शरीर की बैठक।फिर आता है।

प्राणायाम- यानी की आत्मा पर काबु करना है।

प्रत्याहार - प्रत्याहार का मतलब होता है , इंद्रियो पर नीयंत्रण करना या उस पर काबू पाना ऐसा होता है।

धारणा.- धारणा का मत्लब है मन को एक स्थान पर स्थीर करना है।

ध्यान - ध्यान का मतलब है लगातार चिंतन करना।

समाधि: समाधी का मतलब अतीन्द्रियज्ञान होता है।

अब ऐ , आठ अंगो का हमारे जीवन क्या महत्व है। ऐ जानते है। तो सबसे पहले है ,

यम नियम

यम और नियम द्वारा मनुष्य के मन की बुराइयां जैसे राग-द्वेष, हर्ष-शोक, जीवन-मृत्यु, काम-क्रोध आदि दूर की जाती हैं और इस प्रकार निर्मल हुआ मन परमेश्वर से एकाकार हो जाता है। वास्तव में यही योग है। चिकित्सक अक्सर बहुत से रोगों को दूर करने के लिए व्यक्ति को वजन और मोटापा दूर करने की सलाह देते हैं।

आसन

पतंजलि के अष्टांग योग में यम, नियम के बाद तीसरा स्थान आसन का है। पतंजलि के अनुसार स्थिर एवं सुखपूर्वक बैठना आसन कहलाता है। अर्थात् योगी अपनी आवश्यकता के अनुसार जिस भी विधि से स्थिर भाव से सुखपूर्वक बहुत समय तक बैठ सके वही आसन है। आसन का प्रभाव शरीर के विभिन्न अंगों पर पड़ता है।

प्राणायाम

योग में प्राणायाम का विशेष महत्त्व है। प्राण का अर्थ जीवन शक्ति एवं आयाम का अर्थ ऊर्जा पर नियंत्रण होता है। अर्थात् श्वास लेने संबंधी कुछ विशेष तकनीकों द्वारा जब प्राण पर नियंत्रण किया जाता है तो उसे प्राणायाम कहते हैं। प्राणायाम के तीन मुख्य प्रकार होते हैं- अनुलोम-विलोम, कपालभाति प्राणायाम और भ्रामरी प्राणायाम। , प्राणायाम हम हमारी शारीरिक और मानसिक समस्या का समाधान काफी हद तक किया जा सकता है।

प्रत्याहार

जब इंद्रियाँ विषयों को छोड़कर विपरीत दिशा में मुड़ती हैं तो प्रत्याहार होता है। अर्थात् इंद्रियों की बहिर्मुखता का अंतर्मुख होना ही प्रत्याहार है। योग के उच्च अंगों के लिए अर्थात् धारणा, ध्यान तथा समाधि के लिए प्रत्याहार का होना आवश्यक है।

धारणा

योग दर्शन के अनुसार- देशबन्धश्चित्तस्य धारणा। (योगसूत्र 3/1) अर्थात्- किसी स्थान (मन के भीतर या बाहर) विशेष पर चित्त को स्थिर करने का नाम धारणा है। आशय यह है कि यम, नियम, आसन, प्राणायाम और प्रत्याहार द्वारा इंद्रियों को उनके विषयों से हटाकर चित्त में स्थिर किया जाता है।

समाधि

ध्यान की उच्च अवस्था को समाधि कहते हैं। हिन्दू, जैन, बौद्ध तथा योगी आदि सभी धर्मों में इसका महत्व बताया गया है। जब साधक ध्येय वस्तु के ध्यान में पूरी तरह से डूब जाता है और उसे अपने अस्तित्व का ज्ञान नहीं रहता है तो उसे समाधि कहा जाता है। पतंजलि के योगसूत्र में समाधि को आठवाँ (अन्तिम) अवस्था बताया गया है।

राजयोग : पातंजलि की इस अतुल्य नीधि को मूलतः राजयोग कहा जाता है। इस पर अनेक टिकाएँ एवं भाष्य लिखे जा चुके हैं। इस ग्रंथ का महत्व इसलिए अधिक है क्योंकि इसमें हठयोग सहित योग के सभी अंगों तथा धर्म की समस्त नीति, नियम, रहस्य और ज्ञान की बातों को क्रमबद्ध सिमेट दिया गया है। इसीलिए मैंने राजयोग में गहन अध्याय किया

इस ग्रंथ के चार अध्याय हैं-

(1) समाधिपाद

(2) साधनापाद

(3) विभूतिपाद

(4) कैवल्यपाद।

(1) समाधिपाद : योगसूत्र के प्रथम अध्याय 'समाधिपाद' में पातंजली ने योग की परिभाषा इस प्रकार दी है- 'योगश्चित्तवृत्तिनिरोध'- अर्थात् चित्त की वृत्तियों का निरोध करना ही योग है। मन में उठने वाली विचारों और भावों की श्रृंखला को चित्तवृत्ति अथवा विचार-शक्ति कहते हैं। अभ्यास द्वारा इस श्रृंखला को रोकना ही योग कहलाता है। इस अध्याय में समाधि के रूप और भेदों, चित्त तथा उसकी वृत्तियों का वर्णन है।

(2) साधनापाद : योगसूत्र के दूसरे अध्याय- 'साधनापाद' में योग के व्यावहारिक पक्ष को रखा है। इसमें अविद्यादि पाँच क्लेशों को सभी दुखों का कारण मानते हुए इसमें दुःख शमन के विभिन्न उपाय बताए गए हैं। योग के आठ अंगों और साधना विधि का अनुशासन बताया गया है।

(3) विभूतिपाद : योग सूत्र के अध्याय तीन 'विभूतिपाद' में धारणा, ध्यान और समाधि के संयम और सिद्धियों का वर्णन कर कहा गया है कि साधक को भूलकर भी सिद्धियों के प्रलोभन में नहीं पड़ना चाहिए।

(4) कैवल्यपाद : योगसूत्र के चतुर्थ अध्याय 'कैवल्यपाद' में समाधि के प्रकार और वर्णन को बताया गया है। अध्याय में कैवल्य प्राप्त करने योग्य चित्त का स्वरूप बताया गया है साथ ही कैवल्य अवस्था कैसी होती है इसका भी जिक्र किया गया है। यहीं पर योग सूत्र की समाप्ति होती है।

राजयोग में मानव जीवन की काफी समस्या का वर्णन किया है और उसका सरल शब्दों में समस्या का समाधान भी बताया गया है। इस वजह से मेने राजयोग पर गहन अध्याय किया।

- कर्मयोग

कर्मयोग वस्तुतः स्वामी जी के अनुसार **कर्मयोग** वस्तुतः निःस्वार्थपरता और सत्कर्म द्वारा मुक्ति लाभ करने की एक विशिष्ट प्रणाली है। विवेकानन्द कहते हैं कि बिना किसी निजी स्वार्थ के लोकोपकार के लिए अपना कर्तव्य

सर्वश्रेष्ठ तरीके से करना ही **कर्म योग** है।

कर्मयोग के मुख्य अंग राजयोग से समान है।

- ज्ञानयोग

ज्ञान योग मतलब **ज्ञान और स्वं का जानकारी प्राप्त करने को कहते हैं**। ये अपनी और अपने परिवेश को अनुभव करने के माध्यम से समझना है। स्वामी विवेकानन्द के ज्ञानयोग सम्बन्धित व्याख्यान, उपदेशों तथा लेखों को लिपिबद्ध कर 'ज्ञानयोग' पुस्तक में संकलित किया है।

ज्ञान योग के चार सिद्धांत हैं :

विवेक-गुण-दोष का अन्तर कर पाना

वैराग्य-त्याग, आत्म त्याग, संन्यास

षट संपत्ति-छः कोष, संपत्तियां

मुमुक्षुत्व-ईश्वर प्राप्ति के लिए निरन्तर प्रयास

-भक्तियोग

हिन्दू धर्म में भक्ति योग से आशय अपने इष्ट देवता में अनुराग रख कर आन्तरिक विकास करने से है। भजन कीर्तन व सत्संग करना। इसे 'भक्ति मार्ग' भी कहते हैं। यह उन तीन मार्गों में से एक है, जिससे मोक्ष की प्राप्ति हो सकती है।

≡ मध्यस्थ दर्शन

मध्यस्थ दर्शन क्या है ?

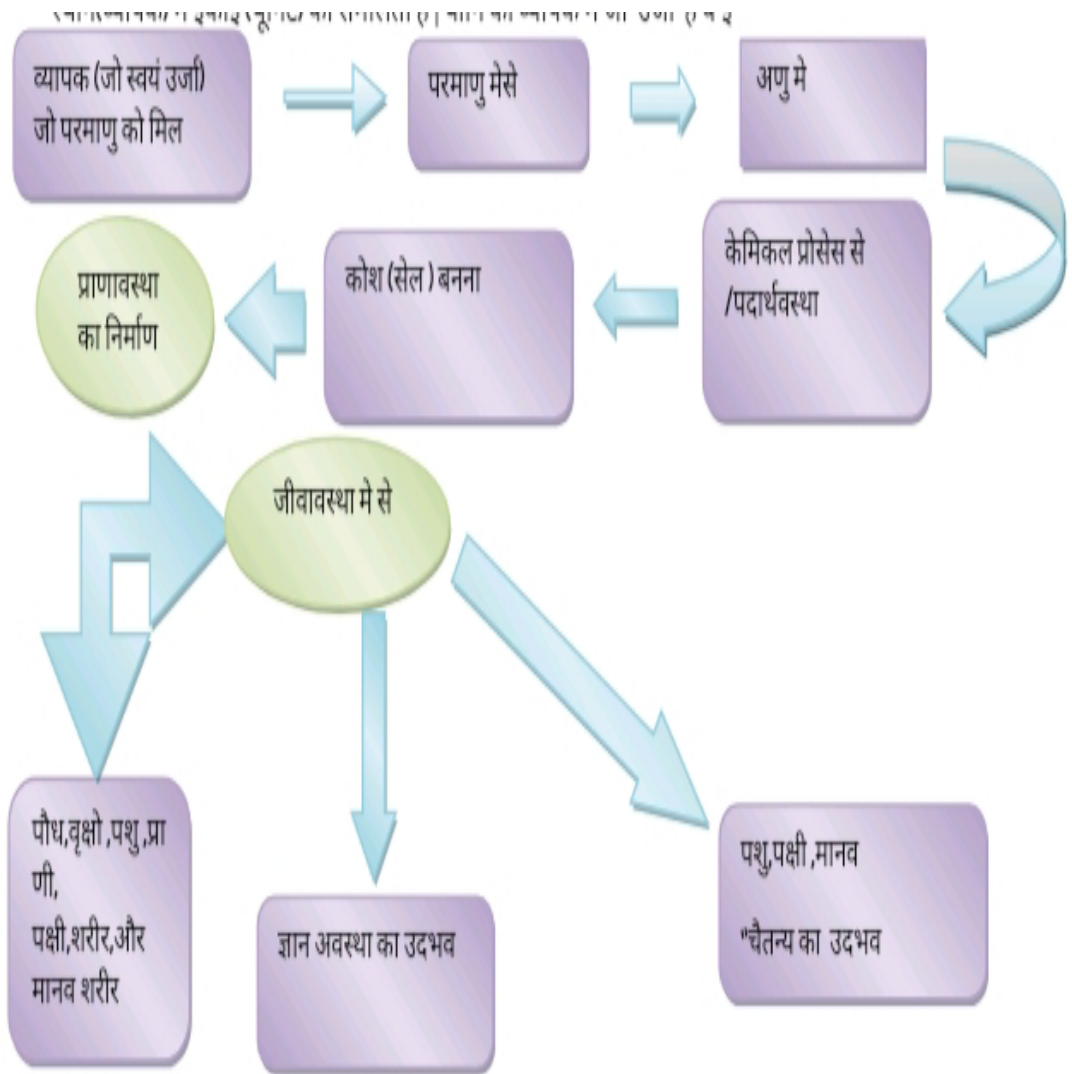
मध्यस्थ दर्शन का सम्पूर्ण विषय वस्तु सार्वभौमिक और सार्वकालिक है अर्थात् यह सभी जगह - सभी समय एक जैसा ही रहता है। दुनिया के किसी भी कोने में रहता हुआ व्यक्ति किसी भी समय इस विचार को समझने के लिए सक्षम है, इसके लिए कोई विशेष लाक्षणिकता का होना जरूरी नहीं है।

मध्यस्थ दर्शन का मतलब अस्तित्व सहअस्तित्व है मतलब की जो अस्तित्वमे है और उसके साथ (व्यापक और यूनिट /इकाई) है उसिकों सहअस्तित्व कहा गया है। यही परम सत्य है। मध्यस्थ दर्शन (सहअस्तित्ववाद) भारत हालही मे बनाया गया नया दर्शन है जो श्री अग्रहार नागराज द्वारा प्रतिपादित एवं लिखित है। यह "अस्तित्व मूलक मानव केन्द्रित चिंतन" है। दर्शन का तात्पर्य वास्तविकता को जैसे है वैसे ही समझने तथा प्रकट करने से है। यही प्राणावस्था, जीववावस्था मे प्रजाति /जाती देखने को मिलती है किन्तु मानव मे कोय जाती नहीं है। वो खुद एक जाती है। व्यापक को उर्जा का स्वरूप माना गया है। और जो स्वयं उर्जा का स्वरूप है उसिको ईश्वर कहा गया है। वैसेही खाली स्थान(व्यापक) मे इकाई (यूनिट) को समालेता है। यानि की व्यापक मे जो उर्जा है।

मध्यस्थ दर्शन का सम्पूर्ण विषय वस्तु सार्वभौमिक और सार्वकालिक है अर्थात् यह सभी जगह - सभी समय एक जैसा ही रहता है। दुनिया के किसी भी कोने में रहता हुआ व्यक्ति किसी भी समय इस विचार को समझने के लिए सक्षम है, इसके लिए कोई विशेष लाक्षणिकता का होना जरूरी नहीं है।

- स्रोत

मध्यस्थ दर्शन अस्तित्व में अनुभव की ही अभिव्यक्ति सम्प्रेषणा प्रकाशन है। एम यह 'साधना-समाधि-संयम विधि' से प्राप्त हुआ है। यह दर्शन अथा से इति तक प्रमाणिक व व्यवहारिक है। यह दर्शन स्वयं प्रयोग व्यवहार और अनुभवात्मक प्रमाणों के कसौटी से निकला हुआ है, इसीलिए निर्विवाद है।



- विषय वस्तु

मध्यस्थ दर्शन (सहअस्तित्ववाद) विकास के क्रम में वास्तविकताओं के आधार पर निःसृत जीवन दर्शन है। यह चैतन्य प्रकृति का रहस्य उद्घाटन करता है। इस दर्शन में यथार्थता, वास्तविकता, सत्यता का प्रतिपादन है।

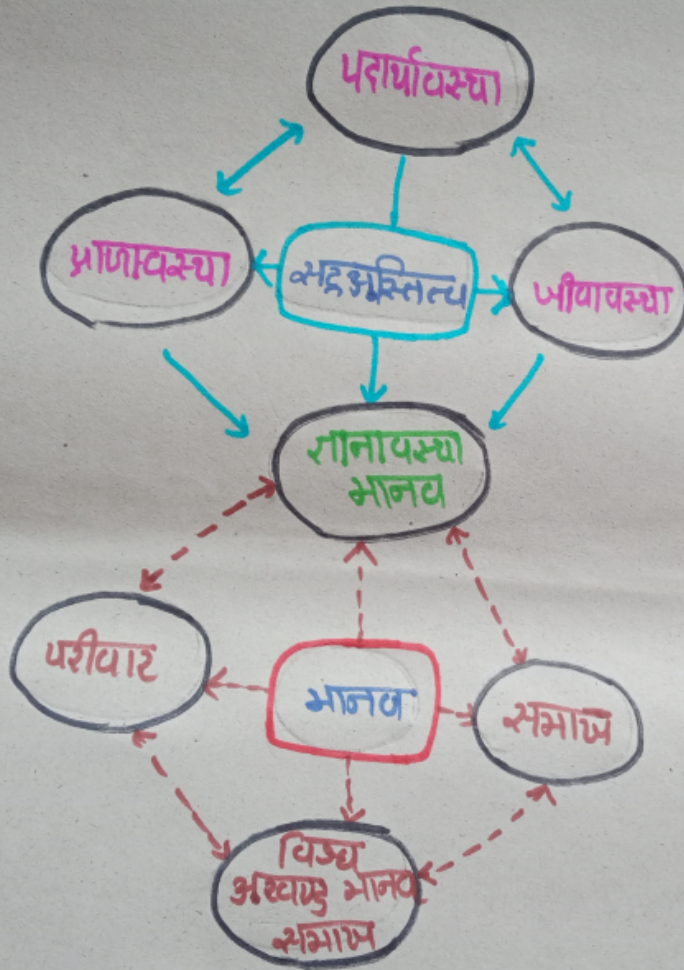
- मानव जीनें में प्रयोजन

इस दर्शन में मानव के जीने के सभी आयाम तथा सभी स्थितियों से सम्बंधित सभी प्रश्नों के समाधान सार्वभौम रूप में प्राप्त हैं। जाति, वर्ग, एवं सम्प्रदाय विहीन अखंड मानव समाज को पाने के लिए सार्वभौमिक सामाजिक (धार्मिक), आर्थिक एवं राज्यनैतिक नीति प्रतिपादित करता है, जिससे सार्वभौम मानवीय व्यवस्था संभव हो जिससे ही मानव जीवन का चिरंकांक्षित सुख शांति संतोष आनंद संभव है।

मध्यस्थ दर्शन हालही में बना हुआ नया दर्शन है। पर उसमे हालही में हीराजी मानव जीवन, प्रकृति जीवन, सामाजिक आदि का वर्णन किया है और वर्तमान समय में चल रही मानव समस्या और उसका समाधान भी बताया गया है। और उसमे ऐ भी बताया गया है। वर्तमान समय में चल रही मानव जीवन और प्रकृति में चल रही समस्या वो सब मनुष्य की अप्रवृत्ति के कारण हो रही है उसमे प्रकृति कोई हाथ नहीं है। इन सब में केवल मानव ही जीमेदार हैं।

सहअस्तित्व में छह अवस्थाओं में परस्पर पुरुक संबंध

प्रत्येक अवस्था स्वयं में व्यवस्था है समग्र व्यवस्था में भागीदार है मानव की प्रकृति में भागीदारी न होने से मानव अस्वस्थ है



मानव की परिवार, समाज और विश्व में भागीदारी न होने से अस्वस्थ।

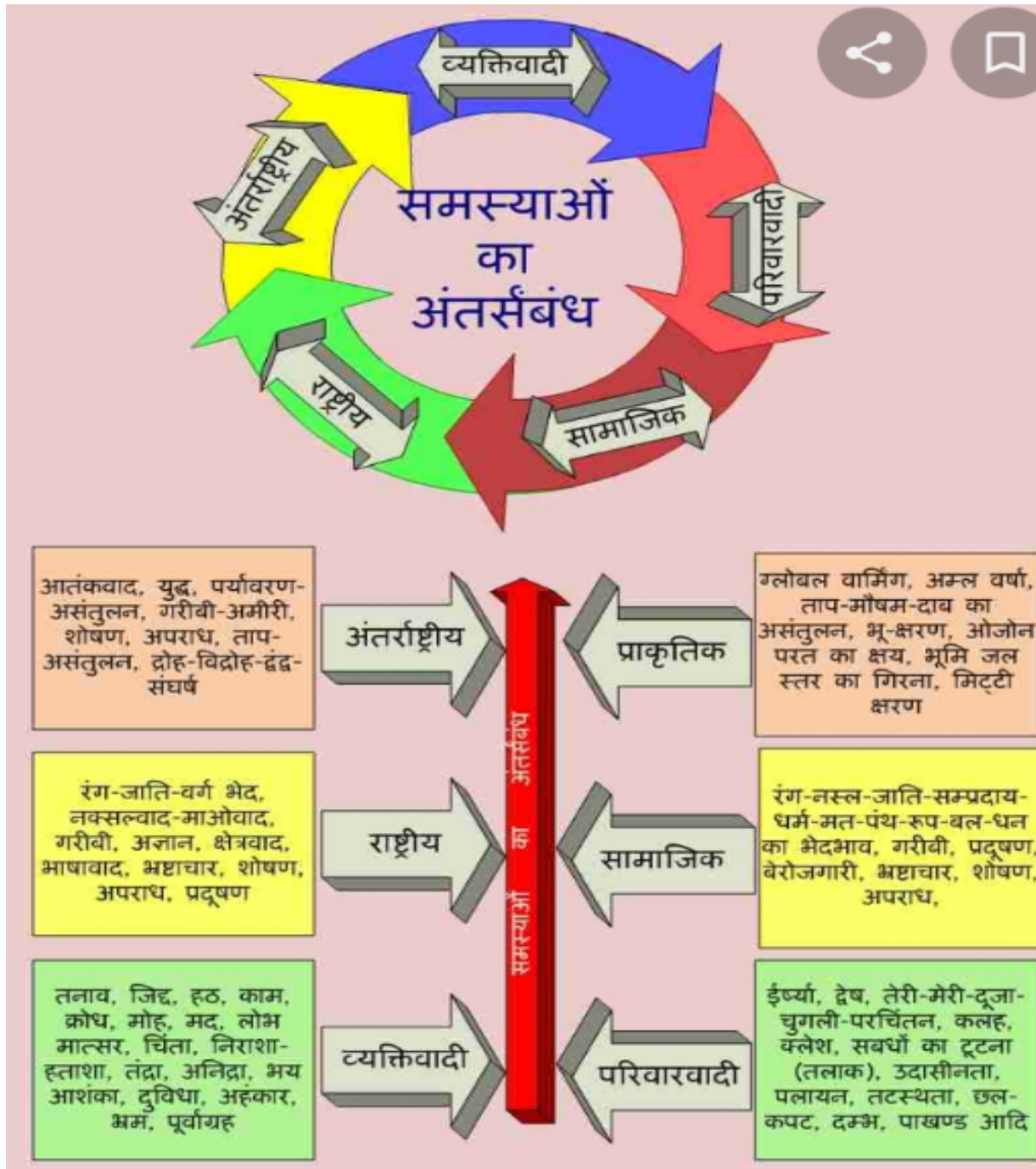
मध्यस्थ दर्शन में ए. नागराज्यजी ने जगत को सहअस्तित्व के रूप बताया है, जिस में व्यापक (खाली जगह) और

इकाई आती है। इन दोनों का एक साथ होने को सहअस्तित्व कहा गया है। ऊपर दर्शाए गए चार्ट में चार अवस्था की बात की गई थी। जो है पदार्थवास्था, प्रणावस्था, जीवावस्था और ज्ञानावस्था जिन में जमीन, पानी, पेड़, पौधे, पशु, पक्षी और मानव है। हम पेड़, पौधे, पशु एवं पक्षी में अलग-अलग जाती देख सकते हैं परंतु मानव एक ही जाती है। पर आज के समय में मानव ने मानव में जाती बनानी शुरू कर दी है जो रंग, आकर, धन, धर्म, आदि के आधार पर है।

यहाँ और एक खामी भी दिखाई पड़ती है कि जो चार अवस्थाएँ हैं उनमें जो मानव है वो अपना पोषण करने हेतु बाकि की तिन अवस्था में से लेते रहते हैं परंतु उन तिन अवस्था को वापिस देने में पीछे हट जाते हैं उनके कारन असंतुलन पैदा होता दिखाई दे रहा है। जो एक बड़ी समस्या है।

अब हम मध्यस्थ दर्शन और अद्वैत वेदान्त के तूलात्मक अध्ययन की तरफ बढ़ेंगे। यहाँ सबसे पहले तो आधार की बात करे तो मध्यस्थ दर्शन मानव को आधार मानके चलता है और अद्वैत वेदान्त दर्शन ब्रह्म को आधार मानके चलता है। यहाँ 'जगत' की बात करे तो मध्यस्थ दर्शन में कहते हैं कि जगत सहअस्तित्व है और अद्वैत वेदान्त में जगत को माया या मिथ्या कहा गया है, यानी कि कोई वस्तु जो पूर्ण सत्य नहीं है। जगत में दिखाई पड़ती चीजों को भी माया कहा है और ब्रह्म को सत् मानते हैं। जहाँ मध्यस्थ दर्शन में ईश्वर के साथ-साथ मानव को भी करता कहा गया है। मध्यस्थ दर्शन में कहते हैं कि मानव को कर्म सवतंत्रता और कल्पना शीलता दी गई है, जिसकी वजह से मानव के पास विकल्प (choice) है। उन विकल्प के कारन मानव या तो अस्तित्व सहज नियम को जानके जीता है और उसे स्वीकार करके निरंतर सुख की ओर बढ़ता है या फिर मानव मनमानी करता है (self-centred) जहाँ वह सिर्फ

इस धरती पर अवस्थित सभी जीवों में से केवल मानव ही यह सम्पूर्ण अस्तित्व का ज्ञाता (जानने वाला) है। जानने की सम्पूर्ण वस्तु तीन है; सहअस्तित्व के रूप में अस्तित्व, जीवन परमाणु तथा मानवीयता पूर्ण आचरण। इसको सरल भाषा में सहअस्तित्व का ज्ञान, जीवन का ज्ञान तथा मानवीयता पूर्ण आचरण का ज्ञान बताया गया है। प्रकृति की प्रत्येक इकाई व्यापक सत्ता रूपी शून्यवकाश में है। यह शून्यवकाश प्रत्येक इकाई को एकसमान रूप से उपलब्ध है और यही मूल ऊर्जा का स्वरूप भी है। शून्यवकाश को ही व्यापक भी कहा है। प्रकृति में अवस्थित सभी इकाइयों की भिन्न लाक्षणिकताओं के आधार पर उन्हें चार अवस्था में वर्गीकृत किया गया है। पदार्थ अवस्था, प्राण अवस्था, जीव अवस्था और ज्ञान (मानव) अवस्था है। चारों अवस्थाओं के ध्रुवबिंदु को पहचान कर इसे रूप - गुण - स्वाभाव और धर्म अनुसार वर्गीकृत किया है।



ऊपर जो चार्ट है। वो समस्या का अंतर्संबंध का ही जिसमें अनेक समस्या दर्शाया गया है। जैसे की, अंतर्राष्ट्रीय, प्राकृतिक, राष्ट्रीय, सामाजिक, व्यक्तिवादी, पारिवारिक आदि समस्या को बताया गया है। अंतर्राष्ट्रीय तोर पर आतंकवाद, युद्ध, पर्यावरण, असंतुलन, गरीबी-अमीरी, शोषण, चोरी आदि। प्राकृतिक तोर पर ग्लोबल वार्मिंग, अम्ल वर्षा, ताप-मौसम-दाब का असंतुलन, मिट्टी क्षरण आदि ही। राष्ट्रीय तोर पर रंग-जाती-वर्ग गरीबी अज्ञान, क्षेत्रवाद आदि ही। फिर उसके बाद ही सामाजिक तोर पर धर्म, मत, पंथ, रूप, बल आदि का समावेश है। व्यक्तिवाद तनाव, जिद, हठ, काम, क्रोध, मोह, निराशा, आदि। परिवारवादी पर बात की जय तो उसमें ईर्ष्या, द्वेष, क्लेश छल कपट आदि ऐसी अनेक समस्या वर्तमान समय में देखने को मिलती है तो बात की ऐ सारी समस्या का समाधान कैसे किया जाय।

ऐ सब समस्या का समाधान मध्यस्थ दर्शन में ही है। और उसमें ऐ भी कहा ही ऐ सब समस्या मानव निर्मित है। मानव में अविद्या के कारण और समझदारी के अभाव से उद्भव हुई है। मनुष्य में विद्या का अभाव हो तो उसका स्थान अविद्या लेता है।

जैसे की चोरी के साथ संग्रह, सुख के साथ दुःख, सत्य के साथ असत्य आदि। जो मनुष्य में विद्या का अभाव हो तो उसका स्थान अविद्या लेता है। तो देखा जाय तो मनुष्य के दुःख का कारण वो खुद है। ये सब की समस्या का समाधान नीचे दर्शाया गया है।

मानव और प्रकृति में समाहित जमीन, हवा, पानी, वृक्ष, जीव जानवर, इत्यादि की परस्परता में पूरकता है। इन परस्परता को समझते हुए कोई भी कार्य को करने पर दुनिया प्रत्येक मानव संतुष्ट जीवन जी सकता है। इसी को दार्शनिक भाषा में 'स्वयं में समाधान', अपने परिवार में समृद्धि, सामाजिक स्तर पर 'अभयता' और समग्र प्रकृति में 'संतुलन' की स्थिति बताया गया है। स्वयं का समाधानित होना अर्थात् मेरे सभी 'क्यों' और 'कैसे' का उत्तर मेरे पास होना। परिवार में समृद्धि अर्थात् श्रम पूर्वक मेरे परिवार की आवश्यकताओं को पूरा करना। अभयता अर्थात् सामाजिक स्तर पर किसी भी प्रकार के अमानवीय कृत्य का भय न रहना तथा संतुलन अर्थात् प्रकृति की सभी इकाई की परस्परता में सेहत संतुलन की स्थिति निरंतर बानी रहे। इस प्रकार की जीवनशैली को अपनाना प्रत्येक मानव की शुक्ष्म इच्छा रही है।

■ विधियाँ एवं \या प्रक्रियाएँ

इस दौरान मेने योग दर्शन और मध्यस्थ दर्शन ये दोनों का अध्ययन किया सबसे पहले मेने दर्शन के बारे में अध्ययन किया उसमें मेने दर्शन के एक नया भाग मध्यस्थ दर्शन के मुख्य बिंदु का अध्ययन किया और उसमें मुझे पता चला की उसमें मानव जीवन का अस्तित्व और मानव जीवन की समस्याओं के बारे में पता चला। का समाधानका वर्णन किया गया है। और सहअतीत के बारे में भी बात की है। वैसे ही योग दर्शन में भी मेने मुख्य बिन्दु का अध्ययन किया जिसमें समाधि, आसन, ध्यान, आदि मुख्य बिन्दु का वर्णन किया है। फिर मेने योग दर्शन और मध्यस्थ दर्शन का तुलनात्मक अध्ययन किया।

योग दर्शन और मध्यस्थ दर्शन का तुलनात्मक अध्ययन नीचे दर्शाया गया है दर्शाया गया है।

योग सूत्र के अनुसार कर्म

अर्थात् शास्त्र विरुद्ध पापकर्मों को कृष्णकर्म कहा गया है। इन कृष्ण कर्मों से दुख तथा नरक की प्राप्ति होती है तथा इन कर्मों के फलों को जन्म जन्मान्तर तक भोगना पड़ता है। शुक्लकृष्णकर्म - ऐसे कर्म जो पाप व पुण्य के मिश्रण हो। कहा गया है कि शुक्ल कृष्णकर्म से पुनः मनुष्य को जन्म की प्राप्ति होती है।

मोक्ष

अब बात करे मोक्ष की, के ऐ दुखों से मुक्ति कैसे लाया जाय तो हमें पता चला की योग दर्शन में पुरुषार्थशून्यता को इन त्रितापों से ऊपर की अवस्था है। पुरुषार्थशून्यता के पश्चात् ही पुरुष की अपने स्वरूप की स्थिति होती है। योगदर्शन में इसे ही कैवल्य अथवा मोक्ष कहा गया है।

सत्य -

मन, वचन एवं कर्म से सत्य का पालन और मिथ्या का त्याग ही सत्य है। वस्तुतः यथार्थ चिंतन, कथन एवं कर्म में सत्य का अनुष्ठान आवश्यक है। जिस रूप में किसी वस्तु का प्रत्यक्ष किया गया हो या जैसा उसे तर्क या अनुमान से जाना

गया है अथवा अधिकारियों से ज्ञात हुआ हो उसी रूप में उस वस्तु के ज्ञान को धारण करना तथा दूसरों को उसी रूप में बतलाना सत्य है। दूसरों के लिए उपकारपरम और यथार्थ ज्ञानोत्पादक ज्ञान ही सत्य है। यहाँ केवल मिथ्या वचन के परित्याग की बात नहीं मानी गयी है बल्कि अप्रिय वचनों से परहेज की गयी है।

ईश्वर

योग दर्शन में ईश्वर की सत्ता को स्वीकार किया गया है। योग के प्रणेता पतंजलि ने ईश्वर को एक ऐसा विशिष्ट पुरुष बताया है, जो क्लेश, कर्म, परिणाम, आशय (संस्कार) आदि से अप्रभावित रहता है। वह नित्य, सर्वव्यापी, सर्वज्ञ तथा सर्वशक्तिमान है। वह सर्वविध परिपूर्ण है। ईश्वर का प्रतीक ओम् है। ईश्वर-भक्ति समाधि प्राप्त करने का एक सुनिश्चित साधन है। ईश्वर का अस्तित्व सिद्ध करने के लिये निम्नलिखित प्रमाण दिये गये हैं -

वेद ईश्वर की सत्ता का प्रतिपादन करते हैं

।संतोष -

कर्तव्य का पालन करते हुए उसका जो कुछ परिणाम उपलब्ध हो एवं प्रारब्ध के अनुसार अपने आप जो कुछ प्राप्त हो, इतना ही नहीं जिस अवस्था एवं परिस्थिति में रहने की स्थिति प्राप्त हो उसी में संतुष्ट रहना, किसी प्रकार की तृष्णा न करना संतोष है। इसे ऐसे भी कहा जाता है - " विषय वासना के परित्याग से तृष्णा रहित होने से उत्पन्न सुख संतोष है। 'कह जाता है - संतोष से परम सुख का लाभ मिलता है ('संतोषं परम् सुखम्')।

योग के अनुसार समाधि क्या है?

जब साधक ध्येय वस्तु के ध्यान में पूरी तरह से डूब जाता है और उसे अपने अस्तित्व का ज्ञान नहीं रहता है तो उसे समाधि कहा जाता है। पतंजलि के योगसूत्र में समाधि को आठवाँ (अन्तिम) अवस्था बताया गया है। समाधि के बाद प्रज्ञा का उदय होता है और यही योग का अंतिम लक्ष्य है।

तप -

अपने वर्ण-आश्रम, परिस्थिति और योग्यता के अनुसार स्वधर्म का पालन करना और उसके पालन में जो शारीरिक या मानसिक अधिक से अधिक कष्ट प्राप्त होता है उसे सहन करना तप है। व्रत, उपवास आदि को भी इसी में शामिल किया जाता है। सर्दी-गर्मी, भूख-प्यास, हानि-लाभ आदि सहन कर इन दण्डों से उबरना ही तप माना जाता है।

आत्मा-

योग दर्शन के अनुसार पुरुष को ही आत्मा का पर्याय बताया गया है।

अस्तेय -

मन, वचन एवं कर्म से किसी वस्तु का हनन न करना, उसके अधिकार एवं प्राप्त वस्तु से उसके अधिकारियों को वंचित न करना ही अस्तेय है। सीधे शब्दों में कहा यह जाता है दूसरे के स्वामित्व का अपहरण करना स्तेय है और इसका अभाव अस्तेय है।

मध्यस्थ दर्शन के अनुसार,

मोक्ष

मोक्ष का अर्थ कर्मबंधन से मुक्ति पाना ऐसा होता है ।

ईश्वर

ईश्वर के बारे में मध्यस्थ दर्शन में व्यापक और इकाई के को माना जो उसे निर्माण के लिए कोई ऊर्जा या शक्ति की जरूर नहीं होती वो स्वयं ऊर्जा है।

सहस्तीत्व

सहस्तीत्व का अर्थ है व्यापक और इकाई का साथ रहना

तो ये बात हुई दोनो दर्शन के मुख्य बिंदु की बात की

फिर हमने तुलनात्मक अध्यायन किया उसमे हमे पता चालाकी दोनो दर्शन मे मनवा जीवन की समस्या के बारे में वर्णन किया है। और उस समस्या का कैसे समाधान करे ऐ भी कहा है। वर्तमान समय की बात की जाय तो मनुष्य अनेक समस्या से घेरा हुआ है। जैसे की आज कल छोटे,बड़े सभी लोग तनाव , चिंता आदि जैसी समस्या से जूज रहा है। और ऐ ऐसी समस्या जिसे मानव के स्वास्थ्य पर भी गहरा प्रभाव पड़ता है तो उसका समाधान योग दर्शन और मध्यस्थ दर्शन में दिया गया है ।

अब बात करे तो मेने ऐ प्रोजेक्ट पर मेने कैसे काम किया मेने इस इंटरनेट शिप दौरान में हमारे मेंटर की सहता ली उन्होने हमे मध्यस्थ दर्शन क्या हैं। और हमारे जीवन में उसका क्या महत्व है उस पर पठन करवाया और समझाया। उसकी एक जीवन विद्या शिविर भी उसे हमे हमे काफी मदद मिली। योग दर्शन के जानने और समझने केलिए हम योग दर्शन के जानकार व्यक्ति की मुलाकात ली उसे हमे काफी जानकारी प्राप्त हुई। हमने लाइब्रेली में भी पुस्तकों का अध्ययन किया । इस प्रोजेक्ट को बनाने केलिए मेने इंटरनेट सोर्स की भी सहायता ली जैसे के गूगल से काफी मदद मिली , यूट्यूब में मेने योग दर्शन और मध्यस्थ दर्शन के लेक्चर देखे और उसका अध्यायन किया। इस तरह से मेने जानकारी प्राप्त की ।और कार्य किया ।

। परीनाम

दर्शनशास्त्र मे योग दर्शन और मध्यस्थ दर्शन का अध्ययन करने करते मुजे पता चला ऐ दोनों मे वर्तमान मे चल रही मानव समस्या के समाधान का निवारण बताया है।

दर्शन शास्त्र की उत्पत्ति मानव जीवन को मुक्ति दिलाकर उसे मोक्ष प्राप्त करवाना है। यही उद्देश है।

महर्षि पतंजलि द्वारा रचित योग दर्शन उसके मुख्य बिंदु का अध्ययन करने से पता चला कि इससे मानव जीवन और प्रकृति जीवन की भी रक्षा की जा सकती हैं। जैसे कि हमने बताया था की हम उस रिपोर्ट में मानव जीवन की समस्या और उसका समाधान बताएंगे जैसे की मानव की इंद्रियों पर कोई नियंत्रण न होने पर वो गलत मार्ग पर चला जाता है । उससे उसे बड़ी कीमत चुकानी पड़ती है । इस समस्या का हल योग दर्शन में उनके आठ अंगो में से पत्याहार में ध्यान , समाधि , धारणा , है। उससे हम ऐ समस्या का समाधान मिल सकता है । ऐसे अनेक समस्या ही जैसे कि तनाव , चिंता आदि समस्या ऐ सब समस्या का समाधान योग दर्शन में बताया गया है।

मध्यस्थ दर्शन जो श्री नागराज द्वारा रचित है। उसमें मुख्य बिंदु का अध्ययन करने से पता चला कि पूर्वक मानव जीवन और वर्तमान समय में मानव जो जीवन जी रहा है उसके बारे में पता चला आज के समय में मानव जीवन में अनेक समस्या जैसे की पारिवारिक तौर पर संबंध, समाज के तौर पर भ्रष्टाचार, चोरी, और प्रकृति तौर पर मौसम अचानक से बदलाव आना, ग्लोबल वार्मिंग, आदि समस्या है उसका समाधान ही अमानवीय प्रवृत्ति को बंध करे।

दोनों दर्शन के मुख्यबिंदु के तुलनात्मक अध्ययन से पता चला की दोनों दर्शनों की सहायता से इस समस्या का समाधान किया जा सकता है।

विचार- विमर्ष

भारतीय ज्ञान परंपरा (IKS) के द्वारा दिए कुल 18 विषयों में से हमने दर्शन शास्त्र और उसके दर्शन के भागरूप में योग दर्शन और मध्यस्थ दर्शन को इस प्रोजेक्ट में दर्शाया है। और हमने दो महीने से उसपर अध्यायन किया सबसे पहले हमने दर्शन के बारे में जाना उसके मुख्य बिंदु, प्रकार, ये सब के बारे में जाना। फिर दर्शन शास्त्र में के भाग रूप दो अन्य दर्शन जैसे की योग दर्शन और मध्यस्थ दर्शन का अध्ययन किया। जिसमें हमें पूर्वक और वर्तमान में मानवजीवन, और प्रकृति जीवन के बारे में बताया गया है।

दर्शन शास्त्रों में योग दर्शन और मध्यस्थ दर्शन के बारे में अध्ययन किया और उसके मुख्य बिंदु जैसे की योग दर्शन में धर्म, भक्ती, कर्म, राजयोग में यम, नियम, प्राणायाम, समाधि आदी के बारे में जाना और समजा। उसके माध्यम से हम मानव की आंतरिक समस्या जैसे की तनाव, चिंता, आदि और बाह्य समस्या जैसे की शरीर के रोग ये दोनों के बारे में बताया है और इसका निवारण भी ये दर्शन की सहायता से निवारण ला सकते हैं।

वेसे ही हमने मध्यस्थ दर्शन के बारे में अध्ययन किया। जिसमें हमें पता चला की मध्यस्थ दर्शन क्या है। वो जाना, और साथ ही उसके मुख्य बिंदु, प्रकार, आदी ये सब के बारे में अध्ययन किया, मध्यस्थ दर्शन में सहअस्तीत्य, व्यकतीत्व, संघर्ष, पारिवारिक समस्या आदी के बारे में बताया गया है वो जाना।

फिर हमने दोनों दर्शन का तुलनात्मक अध्ययन किया और दोनों दर्शनों में क्या अंतर है क्या कहा गया है? कौन से बिंदु को कौन से दर्शन में और कौन से संदर्भ क्या कहा गया है। उसका तुलनात्मक अध्ययन किया।

तुलनात्मक अध्ययन से हमें पता चला की मुख्य बिंदु की परिभाषा अलग-अलग देखने को मिलती किन्तु उनका अर्थ (भावार्थ) समान मिलता है और ये पता चला की योग दर्शन प्रायोगिक अनुभव पर आधारित दिया गया है और मध्यस्थ दर्शन में वर्तमान समय पर आधारित दिया गया है।

उदारहण के तौर पर हिंसा को योग दर्शन में स्वार्थ परीभाषा बताई गई पर मध्यस्थ दर्शन में हिंसा का मतलब है अपने द्वारा किसीको वोट पहुंचाना।

अब दोनों को मिलाकर, दोनों का अर्थ सामान निकलता स्वार्थ का मतलब वो है जो अपने स्वार्थ बारे में ही सोचकर दूसरों को चोट पहुंचाता है।

इसे ये पता चला है की परीभाषा अलग है पर भावार्थ समान है तो हमने ये अध्ययन किया इसी के साथ हम मानव जीवन समस्याका निवारण भी लासकते हैं पर हा सब में ऐसा नहीं होता दोनों दर्शन में घर अध्ययन करने के बात पता चला की उसमें मानव जीवन का वर्णन किया गया है। एक मानवी के तौर पर उसके कर्तव्य के बारे में बताया ही है। और

मानव जीवन की समूह का उल्लेख किया । और उसका समाधान उसी में से बताया गया है । योग दर्शन के अनुसार उनके आठ अंगों में ही समस्या का समाधान है । मध्यस्थ दर्शन में वर्तमान समय की सारी समस्या का समाधान है ।

निष्कर्ष और सिफारिशें

भारतीय ज्ञान परंपरा के अंतर्गत इस इंटरनेट में दिए गए विषयों में से हमने दर्शन शास्त्र का अध्ययन किया इस दौरान मुझे पता चला कि हमें ऐ शिक्षा के रूप में छात्रों तक पहुंचना चाहिए वो भी हमारे भारतीय शास्त्र के बारे में जाने और समझे । और उन्हें एक मानव की तोर पर उसके क्या कर्तव्य है वो जाने और समझे । जो अभी वर्तमान समय में जो समस्या चल रही । आगे के समय में न हो । वो एक आदर्श मानव बने ।

दर्शन शास्त्रों को पसंद करना हमारा यही उद्देश्य था कि हम हमारे भारतीय, शास्त्रों, ग्रंथों, की जान कारी प्राप्त कर सके और उसे जाने और समझे हमारे भारतीय शास्त्रों क्या महत्व है सबको उसे पहचान करवा ऐ ।

इस प्रोजेक्ट में हमें दर्शनशास्त्रों के भाग रूप दो अन्य दर्शन योग दर्शन और मध्यस्थ दर्शन का अध्ययन किया और उसमें पूर्व मानव जीवन और वर्तमान मानव जीवन की बात की है । और साथी साथ वर्तमान संयम चल रही मानव समस्या का समाधान भी बताया है । सभी समस्या का समाधान दर्शन शास्त्रों मौजूद हैं । अभी तो हम इतनाही कर सके पर इन पर अध्ययन करना जारी रखेंगे ।

स्वीकृतियां

सबसे पहले मैं भारतीय ज्ञान परंपरा (IKS) का धन्यवाद करना चाहती हूँ । क्योंकि उसकी वजह से मैंने इंटरनेट में सामिल हुई और इसके साथ मुझे बहुत कुछ जानने को मिला । और साथ ही साथ हमारे भारतीय शास्त्रों के बारे में पता चला । उससे वर्तमान समय की समस्या को दूर करने हल भी बताया गया है । ऐ सब जानने को मिला फिर मैं हमारे मेंटर का खूब खूब आभार व्यक्त करना चाहती हूँ । की इस इंटरनेट के दौरान हमारे मेंटर ने हमारी बहुत मदद की ओर आपका खूब खूब आभार की हमें इस इंटरनेट के लिए हमें एक मौका दिया । और इस इंटरनेट में आप हमारा मार्ग दर्शन बने और हमें हमारे विषयों पर भी बहुत मदद की इस के लिए आपका आभार व्यक्त करती हूँ । फिर मैं आपकी युनिवर्सिटी का भी आभार मानना चाहती हूँ इन इंटरनेट युनिवर्सिटी ने भी हमारी काफी मदद रूप रही जैसे लाइब्रेरी जिसमें उसमें रखी पुस्तकें जो हमारे बहुत काम आई और उसने हमें हर तरह की फेसिलिटी हमें दी इस वजह से मैं उसका भी आभार व्यक्त करना चाहती हूँ ।

■ संदर्भ

1. गूगल स्कॉलर
2. mdhyasthdarshn.org
3. राजयोग (किताब)
4. कर्मयोग (किताब)
5. भक्ति योग (किताब)
6. **Free digital library (Rajkot)**

■ परिशिष्ट

इस इंटरनेट के दौरान मुझे ये शिक्षा मिली की हमारे भारतीय ग्रंथों के महत्त्व क्या है ये पता चला।